Hindi
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 (Print)
ISSN 2278 – 6414 (Online)
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रसाद की 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्री-विमर्श

• इन्द्रा सिंह • अनुपमा • प्रियंका कुमारी
• शरण सहेली

Received : November 2014
Accepted : March 2015
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : छायावादी कविता के प्रकाश स्तंभ के रूप में सुविख्यात जयशंकर प्रसाद वस्तुतः हिन्दी साहित्याकाश के दिवाकर हैं; जिन्होंने अपनी कालजयी रचनाओं से हिन्दी साहित्य में सभी विधाओं को प्रकाशित किया है। उनके साहित्य में पुरुष-दर्प से दलित नारी के सामाजिक उत्थान से संबंधित विषयों की पर्याप्त समालोचना दृष्टिगत होती है। प्रसाद ने नारी-शोषण का ऐसा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, जो हमारे पुरुष-प्रधान समाज की नग्न सच्चाई को दर्शाता है। मुख्यतः ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित प्रसाद के नाटकों में 'ध्रुवस्वामिनी' अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। हमने उनके नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' में स्त्री-विमर्श की प्रासंगिकता को लेकर परियोजना-कार्य तैयार किया है। इसमें विविध महाविद्यालयों की छात्राओं एवं प्राध्यापक वर्ग को लेकर प्रश्नावली तैयार की गई है, जो प्रासंगिकता के स्तर को प्रदर्शित करती है। विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि 'ध्रुवस्वामिनी' में अभिव्यक्त नारी-सशक्तिकरण की भावना और अधिकार चैतन्यता क्या आज की नारियों का मार्गदर्शन करने में सक्षम है?

संकेत शब्द:- नारी सशक्तिकरण, अधिकार-चैतन्य, आत्ममंथन, सामाजिक-परिस्थितियाँ, आत्मोन्नयन, विश्वपरिवर्तन।

इन्द्रा सिंह
बी0 ए0-तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अनुपमा
बी0 ए0-तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

प्रियंका कुमारी
बी0 ए0-तृतीय वर्ष (2012–2015), **हिन्दी (प्रतिष्ठा),**
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, **बिहार, भारत**

भूमिका :

"भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करके ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है किन्तु तुमलोगों की दस्युवृत्ति ने उसे लूटा है।"

"मैं उपहार में देने की वस्तु, शीतल मणि नहीं हूँ। मुझमें रक्त की तरल लालिमा है मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्मसम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करुँगी।" (प्रसाद, 2011, 24, 25 **)**

" 'ध्रुवस्वामिनी' का आधार इतिहास भले हो पर उसमें नारी-चेतना और इक्कीसवीं सदी में प्रचलित हो चले शब्द स्त्री-विमर्श की पुख्ता नींव है, पर अश्लीलता से परे।" (शर्मा, 2002,7)